कवि-परिचय :

नाम : **मृत्युंजय मिश्र 'करुणेश'**

जनम-तिथि : 30.6.1939

जनम-अस्थान : मिर्जापुर (हिलसा), नालंदा

इनकर ई मुक्तक सरस आउ हिरदय के छूवेवाला हे।

ई मुक्तक में एगो मधुर लय हे जे पाठक के मन के बरबस अपना साथे बहावित ले जा हे। आम-फहम भासा में कवि अपन उद्‌गार व्यक्त कैलन हे। इनकर मुक्तक के बनावट में कसावट, संकेत, प्रतीक, संच्छिप्तता आउ बाँकपन देखते बनऽहे। सउँसे गीत-गजल के फ्रेम में ढालल गेल हे। इनकर मुक्तक में दर्द, चुभन, टीस आउ टभक तो हइए हे साथे-साथ ई मरम के बेध दे हे, छू ले हे। मगही भासा के संस्कार, तेवर, सुभाव, संवाद आउ निछक्कापन के जबरदस्त निर्वाह भेल हे।

ई मुक्तक में पावस रितु के बरनन कैल गेल हे। बरसा रितु में जब मेघ बरसे लगऽ हे तब धरती तरस जा हे। कटकटाल घाम बिसर जा हे आउ घटा के छटा आँख में उमड़ जाहे। बरसा रितु के पहिले धरती केतना खखायल हल, फटल दरार हल, आज पावस रितु के पहिल फुहार के आवइते सगरो सरसता छा गेल। शिवजी के जटा से गंगाधार मेघ रूप में बरस रहल हे।

ठठा-ठठा के बरसलो हे मेघ, बरसे दऽ

ठठा-ठठा के बरसलो हे मेघ, बरसे दऽ;
कि पटपटा के बरसलो हे मेघ, बरसे दऽ।

जहर हटा के बरसलो हे मेघ, बरसे दऽ;
लहर घटा के बरसलो हे मेघ, बरसे दऽ।

जे कटकटाल घाम में घुलल-घुलल रहलऽ;
से छटपटा के बरसलो हे मेघ, बरसे दऽ।

चमक रहल बड़ी बिजुली, मलक रहल मलका;
ई मटमटा के बरसलो हे मेघ, बरसे दऽ।

छटा घटा के अँटा लऽ तूँ आँख में भर-दम;
बहुत रटा के बरसलो हे मेघ, बरसे दऽ।

पहिल फुहार पवित्तर ई गंगाधार नियर;
ऊ शिव जटा के बरसलो हे मेघ, बरसे दऽ।

फटल दरार भर रहल हे खखाल भुइयाँ के;
रिझा-पटाके बरसलो हे मेघ, बरसे दऽ।

अभ्यास-प्रश्न

1. मौखिक :

1. मेघ कइसे-कइसे बरसऽ हे ?
2. 'जहर हटा के बरसलो हे मेघ' के का मतलब हे ?
3. पहिल फुहार के कवि पवित्तर काहे कहलक हे ?
4. कटकटाल घाम से का समझऽ हऽ ?
5. मलका कब मलकऽ हे ?

2. लिखित :

1. मेघ आउ लहर में का सम्बन्ध हे ?
2. कवि आँख में कउची अँटावेला कह रहल हे ?
3. 'खखाल भुइयाँ' के जरिए कवि का कहेला चाह रहल हे ?
4. भुइयाँ आउ मेघ के माध्यम से कवि कउन सा-पीड़ा के व्यक्त कर रहल हे ?
5. जब मेघ बरसऽ हे तब का दिरिस नजर आवऽ हे ?

3. 'चमक रहल बड़ी बिजुली, मलक रहल मलका;
ई मटमटा के बरसलो हे मेघ, बरसे दऽ।
छटा घटा के अँटालऽ तूँ आँख में भरदम;
बहुत रटा के बरसलो हे मेघ, बरसे दऽ।"

(क) ऊपर के लिखल पँक्ति में कउन भाव-सौन्दर्य हे ?

(ख) उपर्युक्त पंक्ति के सिल्प-सौन्दर्य बतावऽ।

4. **नीचे लिखल पंक्ति के सप्रसंग व्याख्या करऽ :**

'पहिल फुहार पवित्तर ई गंगाधार नियर;
ऊ शिव जटा के बरसलो हे मेघ, बरसे दऽ।

5. **नीचे लिखल पद में कउन समास हे ?**

(क) गंगाधार (ख) शिव-जटा (ग) रिझा-पटा।

भासा-अध्ययन :

1. गीत, गजल आउ गीतल में अंतर बतावऽ।
2. नीचे लिखल सबद में कउन अरथ छिपल हे ?

(क) ठठ-ठठा के बरसलो हे मेघ

(ख) पटपटा के बरसलो हे मेघ

(ग) जहर हटा के बरसलो हे मेघ

(घ) लहर घटा के बरसलो हे मेघ

(च) मटमटा के बरसलो हे मेघ

(छ) छटा घटा के अँटा लऽ

(ज) बहुत रटा के बरसलो हे मेघ

3. ई पाठ में कउन-कउन अलंकार आयल हे, खोज के लिखऽ।
4. ई कविता से मिलइत-जुलइत एगो कविता चुन के लावऽ आउ कलास में सुनावऽ।
5. नीचे लिखल के पर्यायवाची सब्द का हे ?

जहर, मेघ, घाम, बिजली, पवित्तर, गंगा, शिव, भुइयाँ।

योग्यता-विस्तार :

1. मगही आउ हिंदी के ग़ज़लकार के सूची बनावऽ आउ उनकर रचना के नाम लिखऽ।
2. विद्यालय में ''ग़ज़ल के नाम आज के साम'' कार्यक्रम के आयोजन करऽ आउ एकरा में मगही आउ हिंदी कलाकार के बोलावे कार्जक्रम के आनंद लऽ आउ मीडिया के सहयोग प्राप्त करऽ।

●